आइए हम सुख की हमारी चर्चा पर वापस आएं। आत्मा की संतुष्टि प्राप्त करने में विफलता का मुख्य कारण यह है कि हमने गंभीरता से विचार नहीं किया कि, "सुख या खुशी क्या है? हम इसके लिए कहां देखेंगे?" इस महत्वपूर्ण विषय पर हमारी चर्चा शुरू करें। खुशी हमेशा अनंत परिमाण की होती है और अनंत काल के लिए होती है। वो खुशी एक बार मिल जाने पर उस पर कभी भी दुःख का अधिकार नही हो सकता । दो महत्वपूर्ण विशेषण, जिन्हें अक्सर इस खुशी का वर्णन करने के लिए उपयोग किया जाता है, वो है अनंत और शाश्वत। ठीक है! हम उस खुशी को चाहते हैं जो अनंत और शाश्वत है। इस खुशी की तलाश में प्रमुख बाधा ये कथन है, "ठीक है, यह सच हो सकता है कि इस तरह की खुशी मौजूद है, लेकिन मेरा तर्क ये है कि मुझे इंद्रियों के माध्यम से खुशी का अनुभव होता है और इन सांसारिक या मायिक सुखों से मन को दूर करना बहुत मुश्किल है।"

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

आइए थोड़ी देर के लिए मायिक खुशियों पर विचार करते है।

1. क्या कोई वस्तु जो किसी भी अपवाद के बिना समानता के साथ सब लोग पसंद करते है? इस तरह की वस्तु को ढूंढना मुश्किल होगा क्योंकि हममें से हर किसी की पसंद अलग-अलग हैं। किसी को मिठाई अच्छी लगती है तो किसी को बिल्कुल नही। कुछ लोग शराब का आनंद लेते हैं, तो कुछ इसे गंदा महसूस करते हैं। कुछ संगीत के शौकीन हैं, कुछ इसे कर्णकर्कश पाते हैं। अच्छा बुरा लगना ये मन का गुणधर्म है न की वस्तु का। किसी भी वस्तु या आदमी में खुशी नही हुआ करती यदि होती एकही चीज सब लोग पसंद करते। लेकिन ऐसा नही होता है।

इसलिए, हमें यह महसूस करना चाहिए कि वस्तु में खुशी नहीं है, लेकिन इसकी उत्पत्ति हमारे मन की अवधारणा में है। यह इस तथ्य से स्पष्ट है कि वस्तु के गुण एकही होने के बावजूद, अलग-अलग व्यक्तियों को अलग-अलग समय पर वह वस्तु अलग-अलग अनुभूती देती है क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति का दिमाग अपने मूल्यांकन के साथ वस्तु को समझता है। चूंकि यह मूल्यांकन एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में भिन्न होता है, उसी वस्तु

से विभिन्न व्यक्तियों को विभिन्न प्रकार की खुशी मिलती है। वही वस्तु किसी और लोगों के लिए आनंददायक नहीं होती है। इतना ही नहीं, कुछ अन्य लोग उसी वस्तु को नापसंद कर सकते हैं।

इस प्रकार, मायिक सुख मूल रूप से वैचारिक या मनोवैज्ञानिक हैं। मायिक खुशी वैचारिक खुशी है। किसी भी वस्तु के बारे में आपकी अपनी अवधारणा आपको खुशी देती है और यह आपकी मूर्खता है कि आपको लगता है कि वस्तु में आपको खुश करने की क्षमता है।